

ॐ श्रीवीतरागायनमः ॐ

॥ अनुक्रमणिका

विषय

मङ्गला चरण-श्लोक

दोहा

अनुपूर्वो

२४ तिर्थकरांका नाम

२० विहगमानों का नाम

१९ गणधरों का नाम -

१६ सर्तियों का नाम

१५ वेदिकी साध वंदना

॥ श्रीगौतमसूत्रम् ॥

सूचना

यह पुस्तक यत्र मे रक्खे, जयन्ता मे
वाच्य दृष्टी भाषा मे अगुद्ध विद्या दृष्टा
विज्ञान कलाकर शब्दावली यही सप्रद कर्मा
के नद्य विनता इ

संज्ञ

मानस्य संज्ञा की भाव, न

एत भाष्य के लक्ष्य व

पुस्तक संज्ञा.

ॐ श्रीवीतरागायतनः ॐ

॥ अनुक्रमणिका ॥

विषय	पृष्ठ
मङ्गला चरण-श्लोक	१
ढाहा	२
अनुपवा	४
२४ तिथिकर्गका नाम	८
२५ विहग्नानो का नाम	९
१० गणधरा का नाम	१०
१६ सतान्या का नाम	१०
अनन्तचार्वाकी साथ वदना	११ सं २२
१८ नियम	२३ सं २२
स्तवन गुणधाम	२२
स्तवन गुणधाम	२३

ध्रीयदम प्रभुजी को स्तवन	३०
ध्यानदाप्रभुजी को स्तवन	३१
अनार्थामुनोंकी सहाय	३३
प्रिया नागि गम	३६ से ४४
जीवा वंशीणी	४५ से ५०
गमसित-श्रद्धा	५१
गजुप्रतीतिवागमांगों	५२ से ५५
चित्त संभृतकी गजाय	५६ से ५८
दान अधिकारकी लायणी	६०
उपदेगी गजन	६२ तथा १०६
	तथा ११०
काया की चेतन को गिर्यामल	६३
उपदेगी स्तवन	६६ तथा ७१
चोर्वीसी लिखछोंका स्तवन	
(चोर्वीसी)	६६ से ७२
चोर्वीसी की वाक्यः	७२ से ७४
श्री प्रिया देवी वाक्यः	७५ से ७६

उपदेशी लावणी	८० तथा ८२
कलियुग की लावणी	८१
सत्ययुग की लावणी	८६
वैरागी लावणी	८८
पर श्री निरखणें ऊपर लावणी	९०
सात व्यसन लावणी	९१
मनको शांति-पद	९२
उपदेशी चतुर्कला	९४
शांतिमणिकी मञ्जाय	९४
सातवार का स्तवन	९७
नेमिनाथजी का स्तवन	९८
चिन्तामणजी का स्तवन	१००
उपदेशी लावणी	१०१
चतन खिलरा स्तवन	१०२
दश बाला का स्तवन	१०३
मंगतरी मञ्जाय	१०५
सुणी सुजान का स्तवन	१०६

अनुपूर्वों १६

२	४	५	३	१
४	२	५	३	१
२	५	४	३	१
५	२	४	३	१
४	५	३	२	१
५	४	३	२	१

अनुपूर्वों २०

३	४	५	२	१
४	३	५	२	१
३	५	४	२	१
५	३	४	२	१
४	५	३	२	१
५	४	३	२	१



॥ अथ २० विहरमानोंके नाम ॥

१	श्री सिमधर स्वामी	११	श्री घञधर स्वामी
२	श्री युगमधर स्वामी	१२	श्री चंद्रानंदन स्वामी
३	श्री पादु स्वामी	१३	श्री चंद्रपादु स्वामी
४	श्री सुपादु स्वामी	१४	श्री भुजंग स्वामी
५	श्री सुजात स्वामी	१५	श्री ईश्वर स्वामी
६	श्री स्वयम्भु स्वामी	१६	श्री नैमम्भु स्वामी
७	श्री रूपमानंद स्वामी	१७	श्री घोरसेन स्वामी
८	श्री अनन्तदाय स्वामी	१८	श्री महाभद्र स्वामी
९	श्री मरुप्रभव स्वामी	१९	श्री देवयस स्वामी
१०	श्री शिखरधर स्वामी	२०	श्री अजितयोग्य स्वामी

वर्त्ताज्यो आणंद ॥८॥ श्री रिपभदेवना भरता-
 दिक सो पुत्र; वैराग्यमन आणी, संयम-लियो
 अद्भुत ॥९॥ केवल उपजाई, करि करणी कर-
 तुत; जिनमत दीपावी, सघला मोच पहुँत ॥१०॥
 श्री भरतेश्वरना, हुवा पटोधर आठ, आदित्य
 जशादिक, पहोंत्या शिवपुर वाट ॥११॥ श्री
 जिन अन्तरना, हुवा पाट असंख्य; मुनि मूक्ति
 पहात्या, टाली कमनो बक ॥१२॥ धन्य कपिल
 मुनिवर, नेमा नमं अगगार; जेणे नननग त्याग्यो,
 महान् रमणी परिवार ॥१३॥ मुनिवर हरकेशि
 चित्त मुनिश्वर मार, गुड संयम पाली, कर दियो
 खेयो पार ॥१४॥ बली डायुकार राजा, घर कम-
 लावनी नार भगु ने जमा, नेहना डाय कुमार
 ॥१५॥ ज्ये जनि रिद्धि लाईने, लाधा संयम
 भार डग अल्पकानमां, पास्या मोन डार ॥१६॥
 बली मजनी राजा, हरग आदिड जाय; मुनिवर
 गड माली, आगथी मारग टाय ॥१७॥ चाग्रि

सर्वार्थसिद्ध पहोंत्या, चवि लेशे निर्वाण; श्री
 ज्ञातासूत्रमां, जिनवरे कर्यां वखाण ॥५४॥
 गौतमादिक कुमर, सगा अठारे भ्रात; सर्व
 अंधक विष्णु सुत, धारणी ज्यारी मात ॥५५॥
 तजी आठ आठ नारी काढी दिजानी वात;
 चारित्र लेइने कीयो मुक्तिनो साथ ॥५६॥ श्री
 अणीक सेनादिक, छये सहोदर भाय; वसुदेवना
 नंदन, देवको ज्यारी माय ॥५७॥ भद्दीलपुर
 नगरी, नाग गाहावइ जाण; सुलसा घेर बधिया,
 सांभली नेमिनी बाण ॥५८॥ तजी वत्रीश वत्रीश
 अंतेउरी, निकर्लीया छटकाय; नल कुंवर समाणा,
 भेटया श्री नेमिना पाय ॥५९॥ करी छठ छठ
 पारणां, मनमें वैराग्य लाय; एक मास संधारे
 मुक्ति वीराज्या जाय ॥६०॥ वली दाखण सारण,
 सुमुख दुमुख मुनिराय; वली कुमर अणादित गया
 मुक्तिगढ मांय ॥६१॥ वसुदेवना नंदन, धन्य धन्य
 गजसुकमाल; रूपे अति सुंदर, कलावंत वय

बाल ॥६२॥ धी नेमि समीपे, छोडयो मोह जंजाल;
 भानुनी पडिमा, गया मशाल महाकाल ॥६३॥
 देव्यो सोमल कोप्यो, मस्तक बांधी पाल; खेरना
 खीरा, शीर टविया असगल ॥६४॥ मुनि नजर
 न खंडी, मेटी मननी माल ॥ कटन परीसह
 सद्दीने मृक्ति गया सतकाल ॥६५॥ धन्य जाती
 मयात्री उबयालादिक साध; संभुने परजुन,
 अनीरुद्ध साधु अगाध ॥६६॥ यत्नी सचनेमी
 दृढ़नेमी, करणी कोधी बाध; दशे मुनि मुगते
 पहोल्या, जिनवर वचन आराध ॥६७॥ धन्य
 अर्जुनमात्री कर्यो कटाग्रह दूर; यीरपे घन लेदने
 सत्यवादी दृया गुर ॥६८॥ करी छट छट पारणां
 लमा करी भगपुर अथ माममांही कर्म कियां
 चक्रगुर ॥६९॥ यत्नी कुंवर अइयंता दीटा गौनम
 ग्लाम; मुगी योगनी बाणी कोधी उत्तम काम ॥७०॥
 घागिअ लटने पहोल्या शिरपुर टाम धर आद
 मकट अंन अन्नध मुनि नाम ॥७१॥ यत्नी

कृष्णरायनी अग्रमहीपी आठः पुत्र बहुदोषे संच्या
पुण्यना ठाट चारित्र लइने तपकरी कर्मज काट
एक मास संथारे पोहतो शिवपुर वाट ॥७२॥

यादवकुल सतियां टाल्यो दुःख उचाट पहोल्या
शिवपुरमें. ए छे सुत्रनो पाठ ॥७३॥ श्रेणिकनी

राणी कालियादिक दश जाणः दश पुत्र वियोगे
सांभली श्री वारनी वाण ॥७४॥ चंदनवालापे

संजम लेइ हुवा जाणः तप करी देहभुशी पहोल्या
छे निर्वाण ॥७५॥ नंदादिक तेरे श्री एणिक नृत्नी

नारः सगली चंदनवालापे लीथो संजम भार ॥७६॥
एक मास संथारे. पहाल्या मुक्ति मभारः ए न्हं

जणानो अंगडमां अधिकार ॥७७॥ श्री एणिक
बेटा जालियादिक तेवानः विन्दे इ न्हं

पाल्यो विश्वावीश ॥७८॥ तप इति इति
मन जगेशः देवलोकि पहोल्या न्हं इति

रीस ॥७९॥ काकंदिनो वटो न्हं इति
महावीर समीपे. लीथो न्हं इति

नी जोड़, नारीना बंधन, ततक्षण नाख्यां
तोड़ ॥६०॥ घर कुटुंब कवीलो, धन कंचननी
कोड़, एक मास संथारे, टाले भवनी खोड़ ॥६१॥
श्री सुधर्मास्वामीना शिष्य, धन्य धन्य जंबुस्वाम;
तर्जी आठ अंतेउरी, मातपिता धन धाम ॥६२॥
प्रभवादिक तारी. पहोंत्या शिवपुर ठाम; सुत्र
प्रवर्तावी, जगमां राख्युं नाम ॥६३॥ धन्य ढंढण
मुनिवर. कृष्णायना नंद. शुद्ध अभिग्रह पालि,
टाली दीयां भव फंद ॥६४॥ बली बंधक कृपि-
नी. देह उतारी बाल. परीमह सहीने. भव फेरा
दिया टाल ॥६५॥ बली बंधक कृपिना. हुवा
पांचमं शिष्य. घाणीमां पिल्या. मुक्ति गया तर्जी
राम ॥६६॥ संभुतिविजय शिष्य. भद्रबाहु मुनी-
राय: चउदे पुरवधारी. चंद्रगुप्त आणयो टाय ॥६७॥
बली आद्रकुमार मुनि. थुलभद्र नंदिपेण. अर-
णिक अइमंतो. मुनिश्वरानी श्रंण ॥६८॥ चौबी-
सं जिनता मुनीवर. संख्या अठावीस लाख; उपर

धारी; नमो नमो तिण काल ॥१०८॥ ए जतियो
 सतियोनां. लीजे नित प्रते नाम; शुद्धे मन
 ध्यावो. एह तरणनो ठाम ॥१०९॥ ए जतियो
 सतियोशुं. राखो उज्ज्वल भाव; एम कहे ऋषि
 जेमलजी. एह ज तरणनो दाव ॥११०॥ संवत
 अढारने. वरम नानां शिरदार; गढ भालोरमां
 एह कयो अधिकार ॥१११॥ समाप्तम् ॥

॥ अथ १४ नियम ॥

(१) सर्वज्ञ-यानं कच्चा पाणी. कच्चा दाणा
 कच्चा हरी (लिलोत्री) वगेरे सर्वज्ञ (जीवयुक्त)
 अनेक वस्तु समजना जिम्मी मर्यादा अपनी
 इच्छानुसार करना ॥ १ ॥

(२) द्रव्य-याने जितनी वस्तु अपने मुंहमें
 लेनेमें आवे मां उनकी गिणतरी रखकर मर्यादा
 करना ।

मांने छुरसी वगैरे जो बैठनेको तथा, सोनेको काम आवे उसकी मर्यादा करना ॥ ९ ॥

(१०) विलेपण-याने केशर कुंकुं चंदन तैल पीठी वगैरे शरीरको विलेपन करनेकी मर्यादा करणा ॥ १० ॥

(११) दिसी-याने पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर ऊंची नीची यह छ दिसीमें जानेकी मर्यादा करना ॥ ११ ॥

(१२) अवंभ-याने कुशील (स्त्रीसेवन) की मर्यादा करना ॥ १२ ॥

(१३) नाहावण-याने स्नान मंजन करनेकी मर्यादा करना ॥ १३ ॥

(१४) भंतेसुं-याने आहार पाणी करनेकी मर्यादा करना ॥ १४ ॥ इति ॥

(६) त्रसकाय-याने वेंडू, तेंद्री, चौरिंद्री, पंचेंद्री, वगैरे हलते चलते जीवकों विन गुन्हेसे मारनेका तथा सर्वथा मारनेका पञ्चखाण करना ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ३ प्रकारका व्यापारकी मर्यादा ॥

(१) अस्सी-याने शस्त्र, छुरी, कटारी, चक्र, ढाल, तरवार, बंदुक, कतरणी, वगैरे सब जातके शस्त्रोंकी मर्यादा करणा ॥ १ ॥

(२) मसी-याने कलमसे कागज पत्र खत स्ट्रांप वही, वगैरे लिखनेका समानकी मर्यादा करणा ॥ २ ॥

(३) कृपी-याने करसणीका काम (खेत वाग वगेचा वगैरे) जितना रखना हो उस उग्रांतका त्याग कर लेना ॥ ३ ॥ इति ॥

यह सब मिलके एकंदर २३ बोलोंकी मर्यादा श्रावक श्राविकाओंको नित्य हमेश सुबो करके

आसी, छोड सिधास्यो रे ॥ सतगुरु० ॥ २ ॥ घड़ी
घड़ि यों आयु छोजे, खबर पड़े नहीं कांई रे ॥
मनुष्य जमारो मुशकिल पायो, भली पुन्याई रे
॥ सतगुरु० ॥ ३ ॥ इम जाणोने धर्म करो तुम,
खरची वांधो परभव लारो रे ॥ तेजमल कहे
सिइसठ साले, उदयपुर मांही रे ॥ सतगुरु
म्हारा० ॥४॥ ॥ इति गुणग्राम स्तवन समाप्तम् ॥

॥ स्तवन गुणग्राम गणधरजीनो ॥

गणधर प्यारा रे श्री विरजीनंदजीका,
शिष्य इग्यारा रे ॥ गणधर प्यारा रे ॥ टंर ॥ इन्द्र
भुतीने अग्निभुती, वायुभुती सुखदाई रे ॥
पांच पांचसे निकल्या लारे सगला भाई रे ॥
गणधर ॥ १ ॥ विगत भुतीने सुधरमा स्वामी,
वीर पाटवी जाणो रे मडी पुत्रने मोरो पुत्रजी,
अकंपित आणो रे ॥ गणधर० ॥२॥ अचलजीने
मेतारजजी, ब्रले श्री प्रभासो रे ॥ नाम जप्यां

सू आनन्द वंत्त, वंचितयासो रे ॥ गणेश ॥
 गुरु हमारा इन्द्रमलजी, नीमच सहर पथारणी
 तेजमल कहें जेठ गुणन्तर, चवदस साते ॥
 गणेश ॥ ४ ॥

॥ इति गुणग्राम गणेशजीको स्तवन समाप्त ॥

॥ अथ पद्म प्रभुजीनो स्तवन लिख्ये ॥

मांम कैमं गजकां फंद छुड़ायो ॥ परं
 पद्मप्रभु पावन नाम निहारो, पतीन ॥
 हांगे ॥ १ ॥ ॥ जदया धीवर भीलकमाई
 पार्याष्ट जन्मार्गे ॥ नदया जाव हिंम्या तज
 पांमं भवनिधि पारंगे ॥ पदम ० ॥ १ ॥ गो
 प्रमदा यत्नक की. मांटी इत्या च्यारो ॥
 कज्जल हांगे प्रभु भजने, होन ही त्यामं
 ॥ पदम ॥ ॥ येम्या चुगल द्विनाल उर
 थार महा दग गरा ॥ जो इत्यादि भजे
 नानि. नो निरग गरा ॥ पदम ॥ ३ ॥ पार

साथ ॥ श्रेणिक० ॥ ११ ॥ वेदना जात्रे म्हायरी ।
तो लेउं संजम भारं ॥ इम चिन्तवतां वेदना
गइ । प्रभाते रे थयो अणगार ॥ श्रेणिक० ॥ १२ ॥
गुण सुण राजा चिन्तवे । धन धन एह अणगार ॥
राय श्रेणिक समकित लोवो । वान्दी आयोरे
नगर मभार ॥ श्रेणिक० ॥ १३ ॥ अनाथो
जीरा गुण गांवता ॥ कटे कर्मारी कोइ गुण
समय सुन्दर इम भणे । ज्याने वन्दुरे वे कर
जोइ ॥ श्रेणिक० ॥ १४ ॥ इति श्री अनाथी
मुनीरो स्तवन समाप्तम् ॥



थांसुं मोह माहरो अति घणो, ज्युं चकरि डोर
समान; थांने कांई कसी हुई तो सती होऊं थहारे
साथ ॥ २ ॥ जन्म दियो माहरी मांयड़ी, रुप
दियो किरतार; पूरव पुन्य पूरा किया, भर जोड़ी
भारतार ॥ ३ ॥

ढाल २) धणो बोलै वै सुन नारी हे, आग्यां
लोपो मति म्हारी हे । थारै कारण हुं जूदो हुबो
रे, मैतो लोगामें अपजश लीयोरे ॥ १ ॥ नवमास
गरभ में राख्यो हे, थारे कारण छेह में दाख्यो हे ।
माय बापकी काया बलसीरे, तोसुं ऊठि सवारे
लड़सीरे ॥ २ ॥ तूं छे मोटा कुलांरी जाईहे, लीजे
शाखने शोभ सवाई हे । दूजी ढाल ए पूरी को
धीरे निज नारीने पति सीख दीधो रे ॥ ३ ॥

दोहा ।

माय कहे सुन नानड्या, सांभल माहरी
वात । चरित्र देखो नारी तणा, कुण २ चलसी
थारे साथ ॥ १ ॥ सेठजी मनमें जानीयो, माजी





॥ अथ गजुलजी रो थारे मामो लिख्यते ॥

गजुल ऊर्भा विनये रे पोषा, मुणजां २ रे,
 नेम कुंवार, थाप पानं मज्जम लिखा रे; थारी
 जाय चढया गोरनार अर २२ थाय जाया जादव
 नेमजां रे ॥ १ ॥ हुं हुं दाख्या नहां ४ पोषा,
 तिनो २ ४ मज्जम भाग विन थायगण रिम
 दग्दगा रे थारी नक, गताया भग्नार ॥ अथ ०
 ॥ २ ॥ थाया विनृडा हुं गहां ४ पोषा दग २
 गहां मन माय दिन जाय पोषा २२ २, थारी
 हाहालां गज्ज एनार ॥ अथ ० ॥ ३ ॥ नम्रा भा
 नाज्जन न ३ ४ पोषा, नम्राया २ ४ थाय नेय
 हुं का नूनका थायनां ४ थारी मज्जम नम
 हुं का नूनका थायनां ४ थारी मज्जम नम

॥

रे पीया, आभै २ रे, चमके विज, तुम रुसी ने,
 किम गया रे, वारी आई सावण री तीज
 ॥ अब० ॥ ५ ॥ सावण आयो साहवा रे पीया,
 गाज २ रेयो, गन गोर, वुंद लगै पीया वाय
 ज्युं रे, वारी जादव लियो चित चोर ॥ अब०
 ॥ ६ ॥ नेम जिणंद पाछा बल्या रे पीया, आयो २
 रे, भादव मास, दादर पपईया बोलता रे, वारी
 पित्तम नहीं मुक्त पास ॥ अब० ॥ ७ ॥ नेणे
 नौद आवे नहीं रे पीया, आयो २ रे, मास
 आसोज, नेमि मुक्त मुकी गया रे, वारी अब
 किम माणु मोज ॥ अब० ॥ ८ ॥ कातिक कंथ नई
 वावरो रे पीया, ऊभी २ रे, जोऊं वाट, महल
 पधारो सायवा रे, वारी सुनी हिंडोला खाट ॥
 अब० ॥ ९ ॥ मिगसर बेरी आवियो रे पीया,
 देवण २, लागो दोष, ऊंडे पड़वे पोढता रे, वारी
 सब गया पीया सुख ॥ अब० ॥ १० ॥ नेमि
 जिणंद पाछा बल्या रे पीया, आयो २ रे, पापो

अव० ॥ १७ ॥ वरजो सासुजीथांरा पुतने रे,
पीया, वरजो २ वाईसा, थांहरो वीर, गेर गुफा
में वसी रेयारे, वारी घर घर मांगे भीख ॥

अव० ॥ १८ ॥ असाडा आछी तरह रे पीया,
लीनो २ रे, संजम भार, तीनसे परिवार सुं रे,
वारी पोहता रे गढ गिरनार ॥ अव० ॥ १९ ॥
राजमती रंगे भरी रे पीया. लीनो २ रे, संजम
भार, ५४ दिन पेहला गया रे, वारी पोहता रे
मुक्त मभार ॥ अव० ॥ २० ॥ मुरधर देश मां
आवीया रे पीया, नाम २ सखी, चन्द नाम,
श्रावक सब समजु वसे रे, वारी करे धर्म रो
काम ॥ अव० ॥ २१ ॥

॥ इति श्री राजलजी रो वारे मासो समाप्तम् ॥

१ ॥ भारी करमा जीवड़ा, ते किणं, विद जागे हो
 वं० ॥ २० ॥ नियाणो तुमे कियो, पट खंडज
 हेरा हो ॥ इण कर्णी सुं जाण जो, थारां नरके डेरा हो
 ॥ वं० ॥ २१ ॥ पांचुं भव भेला किया, आपा दोनुं
 भाई हो ॥ हिबे मिलणो छे दोहिलो जिम पर्वत
 राई हो ॥ वं० ॥ २२ ॥ ब्रह्मदत्त पहुंचतो नर्क सप्तमी,
 चित्त मुक्ति मभारो हो ॥ कर जोड़ी कवियण
 कहे, आवागमण निवारो हो ॥ वं० ॥ २३ ॥

ॐ इति चित्त संभूतको स्तवन समाप्तम् ॐ



पार्श्व चंद्रप्रभु, दास रहुं चरणा ॥ चरणं नित्य
 वंदु, मेरी जान चरण नित्य वंदु ॥ ज्युं कटे कर्म
 का फंदा, तुम तजो जगतका धंदा, दीठा होये
 नयन अमितो ठरणा रे ॥ दीठा० ॥ पांचपद० ॥
 ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, हृदय
 मांहे धरणा ॥ विमल अनंत धर्मनाथ शांतिजी,
 दास रहुं चरणा ॥ जिनंद मोहे तारो, मेरी जान
 जिनंद मोहे तारो ॥ संसार लगे मोहे खारो;
 वैराग्य लगे मोहे प्यारो, में सदा दास चरणारो;
 नाथजी अब कृपा करणा रे ॥ नाथ० ॥ पांच
 पद० ॥ ३ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनि सुव्रतजी, प्रभु
 तारण तरणा ॥ नमि नेम पार्श्व महावीरजी,
 पाप परा हरणा ॥ तरे भव्य प्राणी, मेरी जान
 तरे भव प्राणी ॥ संसार समुद्र जाणी, सुणो सूत्र
 सिद्धांतकी वाणी, पाप कर्मसें अब तो डरणा
 रे ॥ पाप० ॥ पांचपद० ॥ ४ ॥ इग्याराजी गणधर
 वीस विहरमान, वांच्या शुं मीटे मरणा ॥ अनंत

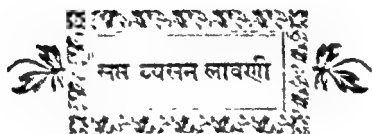
अभोगी देवतणी, गज एरावण देवता होके इन्द्र
को सिर घेठावेगा ॥ जो० ॥ २ ॥ मनुष्य भव
में वसुदेव और चक्रवृत्त का पद मोटा, बड़े २
नरेन्द्र देवता लेते हैं जिनका ओटा, चउदे रत्न
और नवि निधान से किसि वस्तु का नहीं टोटा,
कितने को तो अन्न नहीं मिलता पिणे को नहीं
लोटा, जो निण जावे सो नहीं आवे करणी
विन पछतावेगा ॥ जो० ॥ ३ ॥ तिर्यंच गति में
देखो अश्व गजकी पदवी पाया, सहश्र देवता
सेवे जिनको, कोई जननी उनको जाया, केई
मुखे प्यासे बंध खुटे केइक बाज उठा लाया,
निगोदकी तो वेदन सुण के धरर कालजा
धर्राया, इम जाणी धरो दया दिल में तो दुःख
सहु छुट जावेगा ॥ जो० ॥ ४ ॥ नर्कगति में देख
वेदना परमाधामी देने हैं, बैर बदला बांधा
जिसका फल भुगत कर लेते हैं, इम कर्मकी गत
हे दुष्कर केवल ज्ञानी केने हैं, दुष्कृत से दुःख

घणो पाई ॥ तजो० ॥ १ ॥ काल अनंतों यों वीत्यो,
 धर्म विन रह गयो यों रीतो, देव और धर्म गुरु
 चीनो, रत्न संग तेरे ये तीनों ॥ दोहा ॥ विन
 करणी पड़तायगा, पड़ा ममता के मांय, जन्म
 जरा और मरण मिटावण, लगे जीया ही
 उपाय ॥ मिलत ॥ सोच हिरदे ध्यान लगाई,
 क्या प्रभु कहा सूत्र माई ॥ तजो० ॥ २ ॥ बाढा
 ममत करी भरीया. पापसे जरा नहीं डरिया,
 हर्षसे हिरदा गहवरिया. राग और द्वेष चित
 धरिया ॥ दोहा ॥ महिमा पुजा का लोलपी:
 करे न हित विचार. इंद्रादिक यो होइजी. बडो
 पुजायो बहुवार ॥ मिलत ॥ पृथ्वी पाणो के माई,
 उपज्यो तेहि फिर जाई ॥ तजो० ॥ ३ ॥ मानसे
 निची गती पावे. क्यों वृथा उमर गमावे, सुगणा
 चित ठाम लावे. पच छोड़ शिव पंथ धावे ॥
 ॥ दोहा ॥ उगणीसे छप्पन भला, स्यालकोट
 के मांय, केवलरिख की विनती, सुण जो चित

सैं, नहीं बंधव मुख बोले; साला सेती गूंज
 घण्टेरी, गुप्त बात खोले ॥ ह० ॥ ४ ॥ नारी कारण
 न्यारो होवे, मांगे सो लावे; वा नारी निज
 पतिनैं छोडी, और पुरुष ध्यावे ॥ ह० ॥ ५ ॥ बूढ़ेनैं
 बेटी परणावे; लोभ दृष्टि जोवे; अल्प दिनां में
 हुवे ज दुखणी, निज पतिनैं रोवे ॥ ह० ॥ ६ ॥
 मुखमें न धोला सिर पर धोला, परणीजण चावे;
 कुलवन्ती कोई रहै कारमें, और विगड़ जावे
 ॥ ह० ॥ ७ ॥ भला आदमी बहू सिधावे, पापीनो
 पारो; दुखिया रानी उमर मोटी, सुखी जिवे
 थोड़ा ॥ ह० ॥ ८ ॥ दादो घेंठा पोतो चल
 जावे, नहीं सर्व सुखी पावे; निर्धन के बहु घेंठा
 घेंटी, धनवंत नरसावे ॥ ह० ॥ ९ ॥ मुष धन
 जोयन सृ गवें, लिनलिन आउ हीजे; रामचंद्र
 यहे हलाहल कलुमें, धर्म ध्यान कीजे
 ॥ ह० ॥ १० ॥

जाती घर को ॥ दुजा देख कर करे खुवारी, जव
वन में भट्ययो ॥ चतुर० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥



संतारी लोको नान व्यसन छोडो भावमुं ॥ सं०
॥ टंर ॥ जुवा खिलण मांस मय और, बेर्या
व्यसन शिखार, चोरी पर रमली को रनवो, तानुं
व्यसन निवार हो ॥ सं० ॥ १ ॥ जुवा खिलिया
पांडवान रे, मंग भग्निया दसगाय मदिग सिरी
जादयांन रे, जह्यां मूल में जाय हो ॥ सं० ॥
२ ॥ वाग्दल पेयाने मेरी, अग्निदल वाग्दल,
सत्यपौर पर धन के वाग्दल, पटुंनो नग्यां पेट

बिन ज्ञान आरम किम जोवे, मुढ़ विरथा जन्मा-
 रो खोवे, तेतो भव २ मांहे रोवे रे ॥ मन० ॥ २ ॥
 चारित्र तारे गत चारो, तय सेहो होवे निस्तारो,
 शुद्ध भावसे खेवा पारो, जावे पंचमी गती मभा-
 रो रे ॥ मन० ॥ ३ ॥ दान दिया दरिद्र जावे,
 शील सु ऊंची गत पावे, इम शिव सुख हाथे
 आवे, त्रिलोकीनाथ गुण गावे रे ॥ मन० ॥ ४ ॥
 उगणीसे छपन जाणो, महा वदी पंचम दिन
 ठाणो, पिरोजपुर में केवलखि गाणो रे, जो
 चेतो सोई पुन्य वानो रे ॥ मन० ॥ ५ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



सुखी होय सहुको स्वपेजी । सुखकी न जाणे
 घात ॥ पट काया हणता थकाजी । कहो किम
 सुखीया थात ॥ भ० ही० ॥ २ ॥ चीरो लागे
 आंगली जी तड़क २ दुःख पाय ॥ छेदत भेदत
 जीवने जी । दया न आणे घटमांय ॥ भ० ॥ ही०
 ॥ ३ ॥ व्रत स्थावर जीवां तणाजी लूटे हरजी
 प्राण ॥ समकिनी नाम धराइयोजी । मिथ्यातीरा
 ए लाण ॥ भ० ॥ ही० ॥ ४ ॥ चीर फाड़ भडिता
 करेजी । कंद मूल सब खाय ॥ रात्री भोजन
 करया थकांजी । किए रोने जैनी थाय ॥ भ० ॥
 ही० ॥ ५ ॥ अणगले पाणी पीवनंजी । अणगले नीरे
 न्हाय ॥ अणगले कपड़ा धांवणाजी । सावण
 खार लगाय ॥ भ० ॥ ही० ॥ ६ ॥ पाणी दोले दया
 विनाजी । वेवे मोगी खाल । व्रन जिव तिएमें
 मरेजी । चाले अनानागी चाल ॥ भ० ॥ ही० ॥ ७ ॥
 तुल्या धान येवं तेवे जी । जंतर घरना पीलाय ॥
 रात दिवस आरम्भ करेजी । जग दया नहीं

हौदा धरसों रे, आज रंग वरसे रे, आज रंग
 वरसे रे म्हारे नेम कुंवर विना जीवड़ो तरसे रे;
 आज रंग वरसे रे ॥ १ ॥ सहस्र गोपीया उभी
 हाजर करे नेमजी सुँ अर्जो रे, हांकारो भर लियो
 नेमजी; विवाह जो करसी रे, आज रंग वरसे रे
 ॥ २ ॥ छप्पन क्रोड जगद्व मिल आया दे
 नगारा चढसी रे, छतीस बाजा बाजे जान में;
 ऊढव करसी रे, आज रंग वरसे रे ॥ ३ ॥ द्वारका-
 रा नाथ नेमजी सवी देवता तरसे रे, तोरण सें
 रथ घेरथो नेमजी; हिवड़ो खटके रे, आज रंग
 वरसे रे ॥ ४ ॥ बड़े भाग सुँ जान घणई;
 जुनागढ़ में आई रे, अजब रंगीला जानीया;
 केसरीया कस्यां रे, आज रंग वरसो रे ॥ ५ ॥
 सोवणी सुरत मोहनी सुरत, चांद पुनम केरो
 चमके रे, समुद्र विजयजी रो लाडलो, गिरनारां
 चढ गयो रे, आज रंग वरसे रे ॥ ६ ॥

उपदेशी

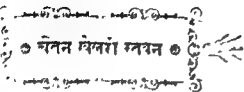


जिन आपकुं जोया नहीं, तन मन कुं खोजा
 नहीं, मन मेल कुं धोया नहीं, अंधोल किये ते
 क्या भया ॥ १ ॥ लालच करे दिल दामका,
 वास्तद करे बदनाम का. हृदे नहीं सुख राम का,
 हरी हर कहा तो क्या भया ॥ २ ॥ कुंती हुवा
 धन मालका, धंधा करे जज्जाल का. हृदा हुवा
 चण्डाल का, काशी गया तो क्या भया ॥ ३ ॥
 गोगा करे संतार का, जाणे कुजड़ा बाजार का,
 आया तीर्थ करि द्वारिका, छापा लिया तो क्या
 भया ॥ ४ ॥ जीवने पित्र कुं नुस्ख नहीं, जनको
 जक आशक नहीं, चण्डाल में कुछ तक नहीं,
 तर्पण किया तो क्या भया ॥ ५ ॥ इस संत में कुछ
 बात है, जिन गानका परकाश है, सोही भला
 जिन खान है, ब्रह्मण भया तो क्या भया ॥ ६ ॥

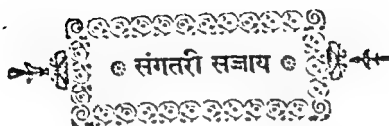
ॐ उपदेशी ॐ



जिन आपकुं जोया नहीं, तन मन कुं खोजा
 नहीं, मन मेल कुं धोया नहीं, अंघोल किये से
 क्या भया ॥ १ ॥ लालच करे दिल दामका,
 वासद करे वदनाम का, हृदे नहीं सुध राम का,
 हरी हर कहा तो क्या भया ॥ २ ॥ कुंती हुवा
 धन मालका, धंधा करे जआल का, हृदा हुवा
 चण्डाल का काशी गया तो क्या भया ॥ ३ ॥
 गोगा करे मंमार का, जाण कुञ्जड़ा बाजार का,
 आया तीर्थ करि डारिका, छापा लिया तो क्या
 भया ॥ ४ ॥ जीवने पित्र कुं सुख नहीं, उनकी
 जक आशक नहीं, चण्डाल में कुछ सक नहीं,
 तर्पण किया तो क्या भया ॥ ५ ॥ डम मांस में कुछ
 वास है, जिग रामका परकाश है, सोही भला
 जिन ग्वास है, ब्राह्मण भया तो क्या भया ॥ ६ ॥



न विनोद रं यो माह कसं मंग से से
 ॥ न० ॥ टंक ॥ चोगर्मा लक्ष जीयां
 चोगर्मा मं गन ग्याया र जीव दृष्टा
 दृष्टा र दृष्टा ग्याया र ॥ न० ॥ २ ॥
 दृष्ट ग्या नर धीम म कर्मा निगंनरं
 कर्मा दृष्ट ग्या रंग धीम निर नर
 ॥ न० ॥ ४ ॥ कर्मा दृष्ट ग्या
 म नाटक र भणकाल र दृष्टा र
 र दृष्टा ॥ विद्या अवनग ॥ ॥ न०
 कर्मा दृष्टा मानग दृष्ट माहो भाहू मय
 र कर्मा दृष्टा मता मता गिर अत्र
 ॥ न० ॥ ६ ॥ कर्मा मता र कर्मा



संगत करले रे साधु की संगत शिव सुखदाता
 रे ॥ सं० ॥ टेक ॥ प्रत्यक्ष कल्प वृक्ष सा जुग
 में जाने पारस मिलीया रे, तुरंत होसी
 तीरणों थारो ज्ञान के सुणीया रे ॥ सं० ॥ १ ॥
 कुटम्ब कबीला धन दौलत में मत ना कभी तुम
 राचो रे, बिन मतलब बिन कोई न पूछे जानों
 सगपण काचो रे ॥ सं० ॥ २ ॥ जूवावाज चोर
 लंपट और मद्य मांसका आहारी रे, इतनों की
 संगत मत कीजो सुन शिक्षा हमारी रे ॥ सं० ॥
 ३ ॥ कुगुरु कनक कामनी भोगी, लोभी और
 धूतारा रे, आप डूबे कैसे तुम्हे तारे, करो विचारा
 रे ॥ सं० ॥ ४ ॥ गौतमस्वामी पूछा कीधी देखो

गजब हुवा, गुल हुसन वह कहाँ गंया, कहाँ यह
दीदार है ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ गुरु हीरालाल प्रसादे,
चौधमल कहै सुणो अपना, हुवे सो आपका
करता विचार है ॥ सुणो० ॥ ४ ॥

~इति~



श्री चौवीस जिनराज का जग में आधार
है, रटत प्रातः सायंकाल हो पल में पार है ॥
॥ टेक ॥ अष्टपथ अजित संभव सार, देवे तार
है, अभिनन्दन सुमति पद्म, गुण अपार है ॥
श्री० ॥ १ ॥ सुपार्श्व चन्द्रप्रभु. सुविध दातार

मुंह ना सूरज को, उसको भी कालने हेरा
 है ॥ ल० ॥ २ ॥ मिलके कुमति वदखाहने,
 पिलादी शराव तुम्हे मोह की ॥ खबरना उसमें
 पड़ती है, कि यहां चन्द्र रोज डेरा है ॥ ल०
 ॥ ३ ॥ कहां तक यहां लुभावोगे, की आखिर-
 जाना तुमको वहां ॥ उठाके चश्म तो देखो,
 हुवा शिर पर सवेरा है ॥ ल० ॥ ४ ॥ गुरु हीरा-
 लालजी के परसाद चौथमल कहे जो चाहो
 सुख ॥ दया की नाव पर चढ जा, यहां दरियाव
 गहरा है ॥ ल० ॥ ५ ॥

ॐ नमः शिवाय



पढालो इल्म को, खेलना खेलाना छोड़ दो, कहें
चौथमल मित्रो सुनो, नसीहत हमारी सार
हैं ॥ ॥ इ० ॥ ५ ॥

२२ (इति) ३०



ॐ वाग्द मात्ता श्री रिपभदेवजी का ॐ



❀ आपाद ❀

हे जा मरुदेवजी. सांच करत हैं मन में ।
मेरा रिपभ गया. क्यों वनमें ॥

❀ आंकड़ी ❀

प्रथम मर्दानाजी लगा आसाड़ चौमासा.
इन्दर घरसन की आसा । मरुदेवजी मनमें भई
उदासा. प्रभु रिपभ गये वनवासा ॥

❧ दोहा ❧

रिपभ प्रभु बनको गये, जगत सुधारन काज ।
भरतादिक सो पुत्रको, बांट दिया सब राज ॥
पुत्र तुन सयही जी, मगन होय रहे धन में ।
मेरा रिपभ गया, क्यों बनमें ॥ १ ॥

❧ श्रावण ❧

श्रावण महीना जी रिमक्तिम मंदला घरसे,
मेग पुत्र बिना जी तरसे । भरतादिकजो सां
पुत्रन के डरसे, मेग नंद निकल गया घरसे ॥

❧ दोहा ❧

नगर श्रयांच्या यं भूरे, कहां गये महागज ।
देनदुर्गभा भग्न का, मेग पुत्र मिलाया आज ॥
अर्जलां मेरे सुन बिनाजी, प्राण निकलसी दिनमें ।
मेग रिपभ गया, क्यों बनमें ॥ २ ॥

❀ दोहा ❀

इन्द्र ध्वजा आगे चले, भामंडल रहे लार ।
 चौसठ चवंर सुरपति करें, धुंधवी गगन मभार ॥
 ऐ सुत तेरा जी, बिलसे सुख सूरी गन में ।
 मेरा रिपभ गया, क्यों वन में ॥ १० ॥

❀ वैशाख ❀

वैशाख महीना जी मरु देवी मन हरये, जय
 रिपभ प्रभु मुख निरखे । नैन पट उधाड़े जी बीत
 राग पद सरखे, चढ़े शुकूल ध्यान कूं परखे ॥

❀ दोहा ❀

गज ऊपर मुक्ति गई, श्रीमरुदेवी मात ।
 पहिले शिवजननी दिया, ऐसे रिपभ सुजात ॥
 जग सुख कारनजी, विचरे प्रभु भगनमें ।
 मेरा रिपभ गया, क्यों वनमें ॥ ११ ॥

❀ जेठ ❀

जेठ का महीना जी रूत गरमी की आई,
में रिपभ चरण लव लाई । दर्श नित तेरा जी
मुझ कूं है सुखदाई, सेवा प्रेम सदा मन भाई ॥

❀ दोहा ❀

धर्म शील आधार से, कुशल सदा आनन्द ।
रिद्धिसार जिन नाम से, रहे दुरती दुख दन्द ॥
हेजी मन सुध करजी, राखो जिन चरनन में ।
मेरा रिपभ गया, क्यों वनमें ॥ १२ ॥

॥ इति ॥



पर करिये निगाह । सर्प चंडकोसा हुवा इस
 क्रोध के परताप से ॥ ५ ॥ दिल भी काबू नहीं
 रहे नुकसान कर रोता वही । धर्म कर्म भी नहीं
 गिने, इस क्रोध के परताप से ॥ ६ ॥ खुद जले
 परको जलावे विवेक की हानी करे । सूख जावे
 खून उसका, क्रोध के परताप से ॥ ७ ॥ जनके
 लिये हँसना बुरा, चिराग को जैसे हवा । ज्यों
 इन्सान के हकमें समझ, इस क्रोध के परताप से
 ॥ ८ ॥ शैतानका फरजन्द यह और जाहिलों
 का दोस्त है । बदकार का चाचा लगे, इस क्रोध
 के परताप से ॥ ९ ॥ इबादत फाका कर्ती, सब
 खाक में देवे मिला । दोजख का मुंह देखेगा,
 इस क्रोध के परताप से ॥ १० ॥ चण्डाल से
 बदतर यही, गुस्सा बड़ा हराम है । कहे चौथ-
 मल कर हो भला, इस क्रोध के परताप
 से ॥ ११ ॥

छोड़दे ॥५॥ गव्व का हुक्म माना नहीं, अजाजिल
काफिर बन गया । शैतान सब उसको कहे, तू
मान करना छोड़दे ॥ ६ ॥ गुरु के परसाद से कहे
चौथमल प्यारे सुनो । अजाजिली सब में बड़ी, तू
मान करना छोड़दे ॥ ७ ॥

ॐ नमो भगवते ॐ

गजल दगावाजी की ६

जाना तुम, यहां न्यार दिन तू दगा करना
छोड़दे । पाक गव्व दिन का मद्रा तू दगा करना
छोड़दे ॥ ८ ॥ दगा कहा या कपट जाल फरेव
या निगधट कहा । जाना चार कवानचत, तू
दगा करना छोड़दे ॥ ९ ॥ चलने उठने दंगने,
वालने हम्पने दगा । तालने और नापने में,
दगा करना छोड़दे ॥ १० ॥ माना कहीं वहन
कही, पर नार का ललना फिर । क्यों जाल कर

० गजल संतोष की ०

सघर नर को आती नहीं, इस लोभ के परताप से । लाखों मनुष्य मारे गये, इस लोभ के परताप से ॥ टेर ॥ पाप मा वालिद बडा, और जुल्म का सरताज है । वकील दोजख का घना, इस लोभ के परताप से ॥ १ ॥ अगर शहनशाह बने, सर्व मुल्क तावे में रहे । तो भी ख्वाहिश नहीं मिटे, इस लोभ के परताप से ॥ २ ॥ जाल में पत्ती पड़े, और मच्छी कांटे से मरे । चार जावे जेल में, इस लोभ के परताप से ॥ ३ ॥ ख्वात्र में देखा न उसको, रोगी क्यों नहीं नीच हों । गुलामी उस की करे, इस लोभ

सवहिं सोलवें वर्ष लौ. मूल सहित विनसाय ॥
 विद्या में हौ कुशल नर. पावे कला सुजान ।
 द्रव्य सुभाषित कोहुं पृनि, संग्रत करि पहिचान ॥
 सोरठ सोवान सखीया. चढ़्या न गढ़ गिरनार ।
 गङ्गा न नाहाया गोमती. गयो जमारो हार ॥
 सोरठ गग सुहामणी. मुखे न मेली जाय ।
 झुं झुं गन गलन्तड़ा. त्युं युं मिठी थाय ॥
 मुखना के दकन को. ग्यो विधाना मौन ।
 जाना सभा मह आमरण. अजहि गुण को भौन ॥
 विद्या दान न ज्ञान नर. शील धम गुण हीन ।
 चिचराह न नर रूप एशु. भुमि भार अनि दीन ॥
 जहा दया नह धम है. ज्या लोभ तहां पाप ।
 जहा क्रोध नह काल है. जहा जमा नह आप ॥
 जिवड़ा जिनवर पुजाय. नाम सम्पति होय ।
 राजा नम प्रजा नम, बाल न बांका होय ॥
 प्रभु को नाम असाल है जामे लगन न माल ।
 नफा बहान टाटा नहीं. भर भर के मन ताल ॥

कधिरा नैन निहारियां, नहीं पलक की आस ॥
 तुलसी जग में आइके, कर लीजे दो काम ।
 देवे को टुकड़ा भलो, लेवे को हरि नाम ॥
 प्रेम २ सब कोई कहे, प्रेम न चीन्हे कोय ।
 आठ पहर भीना रहे, प्रेम कहावे सोय ॥
 लौ लागी जय जानीये, छूटि न कघट्ट जाय ।
 जीवन लौ लागी रहे, मुवा माहिं समाय ॥
 मन पची तव लगि ऊड़े, विषय वासना माहिं ।
 ज्ञान वाज की भूषट में, जब लगि आया नाहि ॥
 मनके बहुतें रङ्ग हैं, छिन २ मध्ये होय ।
 एक रङ्ग में जो रहे, ऐसा विरला कोय ॥
 जेती लहर समुद्र की, तेती मन की दौरि ।
 सहज हीरा उपजे, जो मन आवे ठौरि ॥
 मन के मते न चालिये, मन का मता अनेक ।
 जो मन पर असवार है, ते साधु कोई एक ॥
 गोधन गजधन बाजिधन, और रतन धन खानि ।
 जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूरि समान ॥

फल निर्जरा होत है, यह समाध चित चाव ॥
 पुण्य हीण को न मीले, भली वस्तु का जोग ।
 जब द्राक्ष पक्वान लगे, तब काग कंठ होय रोग ॥
 चिड़ी कमेड़ी कागला, रात चुगण नहीं जाय ।
 नर देह धारी मानवी, रात पड्या क्यों खाय ॥
 आंधा जीमण रातरा, करे अधर्मी जीव ।
 जानव आण छो कार, दे नरकारी नीव ॥
 पाखंडी पूजा करे, पंडित नहीं पहचान ।
 गरम तां घर २ विके, दारु विके दुकान ॥
 गुरु लार्मी चला लालची, दांतुं खेले दाव ।
 दांतुं डूबे वापड़े, बैठ पत्थर की नाव ॥
 एक एक के पीछे चले, रस्ता न कोई बृभता ।
 अन्ध फसे सब घोर में, कहां तक पुकारे सूजता ॥
 दावी पग लार्गी नहीं, गते चले फूंक ।
 गुरु विचारा क्या को, चले मांहि चूक ॥
 दिधा गाली एक है, पलट्या गाल अनेक ।
 ज़ा गाली देवे नहीं, तां गहे एक को एक ॥

एक निन्दक के सात पर, हजार पाप को भारों ।
 उत्तम पर कारज करे, अपना काज वितार ॥
 पुरे ब्रह्म जहान को, ता पति भिदाधार ॥
 अमृत भरे तन मन वचन, निश दिन जग उपकार ॥
 पर गुण मानत मेरु सम, बिरले जन संसार ॥
 सुत आशाकारी जिनहिं, अनुगामि नित्य जान ।
 विभव अलप नन्तोफेहि, सुरपुर गहां स्थित ॥
 नै सुत जे पितु भक्तिरतन हिन कारक पितु होय ।
 जेहि विश्वास सोइ मित्रवर, सुख दायक तिय नये
 कारज हनन पनेज में, प्रिय यश मिलत विशेष ।
 नेहि मित्रन कं दुःखतज, तिय घट पय मुख पर ॥
 नहि विद्वान् दुःखिनि कर, कीजिय मित्रहु कौन ।
 कहहि मित्र कहु कोपकरि, गोपहु नर दुख भौन ॥
 कश होय नेहि धेनु जा दुध न गाम्भिर्न हंस ।
 धौन अर्थ यहि सुत मय करिदत भक्त न जाय ॥
 भूपति औ परितन दचन, औ कन्या को दाद ॥
 एक एक दाद दो, तीनों होत नमान ॥

रहनो सदा इकान्त को, पुनि भजनो भगवन्त ।
 कथन श्रवण अद्वैत को, यहो मतो है सन्त ॥
 यही मतो है सन्त, तत्त्वको चितवन करनो ।
 प्रत्यक ब्रह्म अभिन्न, सदा डर अन्तर धरनो ॥
 कह "गिरधर" कविराय, वचन दुर्जन को सहनो ।
 तज के जन समुदाय, देश निर्जन में रहनो ॥ ३ ॥

पहता पाणी निर्मला, पड़ा गन्ध सो होय ।
 त्यों साधु रमता भला, दाग न लागे कोय ॥
 दाग न लागे कोय, जगत से रहे अलहदा ।
 राग द्वेष युग प्रेत, न चित को करे विच्छेदा ॥
 कह "गिरधर" कविराय, शीत उष्णादिक सहना ।
 होय न बहूँ आसक्त, यथा गङ्गा जल बहता ॥ ४ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ



पुस्तक मिलने का पता—

पानमल उद्देकण सेठिया ।

नं० १०= पुराना चिनावजार स्ट्रीट,

बिहीरा पता—

पोस्ट बक्स नं० २५५ कलकत्ता ।

तारका पता—

“सेठिया” कलकत्ता ।



SRAWAK STAWAN SANGRAH.

To be had at—

Pannmull Odeycaurn Sethia.

Coral & Pearl Merchants,

Office—108, Old China Bazar Street,

CALCUTTA

Letter Address—Post Box 255 CALCUTTA.

Telegraphic Address—“SETHIA”

CALCUTTA.

